काव्य श्रृंगार

Vijoy Shankar Mallik

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

काव्य शृंगार

(मैथिलीक सुरभित पुष्पहार)

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

इम्प्रेशन पब्लिकेशन
पटना

काव्य शृंगार

(मैथिलीक सुरभित पुष्पहार)

प्रथम संस्करण : 2018

सर्वाधिकार : विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

ISBN : 978-81-934306-3-7

आवरण : सुश्री अलंकृता तन्नु

मूल्य : रु. 470.00

प्रकाशक : इम्प्रेशन पब्लिकेशन
सालिमपुर अहरा 'बॉलिया',
कदमकुआँ,
पटना - 800003
मो. - 8877663597

मुद्रक : बी.के.ऑफसेट
नवीन शाहदरा,
नई दिल्ली-32

Kavya Shringar (Poems by Vijay Shankar Mallik 'Sudhpati')

अनुक्रम

1.	हे! वीणापाणी	1
2.	कविक नामपर	2
3.	'शंकर' बनल रहल नेनहि सँ	3
4.	हमर पिता	5
5.	अपन माय सौं	7
6.	मिथिला मैथिल	9
7.	गीत गावी तऽ गावी	10
8.	आत्मबोध	11
9.	सबगुण आगरि मैथिली	12
10.	बारी दिवारी	13
11.	कओनो ऊपाय सोचू प्रबुद्ध	14
12.	गामके दुर्दशा	16
13.	ई वर्ष महाशुभ	18
14.	दुविधा	19
15.	भारतके मूल पाँजि	21
16.	जै जै जै गोपाल	22
17.	हँस नहि, हँसक समय नहि	23
18.	देशक खातिर	25
19.	एक चिट्ठी बेटीक नाम	26
20.	दियाबाती	27
21.	जुनि परतारह	28
22.	छलै जमाना	29
23.	गरीब	31
24.	गरीबक तीन मन	32
25.	अन्हरीक लाचारी	37

Vijoy Shankar Mallik

57. उत्पातक जड़ि 79
58. गामक चिट्ठी 81
59. डॉ. दबंगक दर्शन 83
60. लओजापात 85
61. बोकारो दस्सहि 86
62. मृदुल विचार 87
63. जुनिअगुताइ 88
64. तृष्णाक बिम्ब 89
65. नेतधरम टूटय खू खू 90
66. हरि इच्छा बलवंत 92
67. गंधीक गंध 93
68. कुमुदनी 94
69. बुधना 95
70. जेहने मेहमान 96
71. दूध माँछ दुनु बाँतर 97
72. विकास-विकार 98
73. परिवर्त्तन 99
74. ओहिना छी 100
75. श्राद्धकर्म 101
76. सबहक धूरी एक 102
77. कुहुक कहु... 103
78. वर्षा ऋतु भल 105
79. कुंकुमायल गगन 106
80. लरैनाक बहु (लटका) 107
81. सुकामिनि 109
82. युवतीक यौवन 111
83. पाती 112
84. नानी गाँउ 114
85. प्रेमिकाक पाथेय 118
86. जेठक भुरुकवा 122

Vijoy Shankar Mallik

118.	मधुरस-11	158
119.	मधुरस-12	158
120.	मधुरस-13	159
121.	मधुरस-14	160
122.	मधुरस-15	161
123.	मधुरस-16	162
124.	मधुरस-17	163
125.	मधुरस-18	164
126.	मधुरस-19	164
127.	मधुरस-20	165
128.	मधुरस-21	166
129.	मधुरस-22	167
130.	मधुरस-23	168
131.	मधुरस-24	169
132.	मधुरस-25	170
133.	मधुरस-26	171
134.	मधुरस-27	172
135.	मधुरस-28	173
136.	मधुरस-29	173
137.	मधुरस-30	174
138.	मधुरस-31	175
139.	मधुरस-32	176
140.	मधुरस-33	177
141.	मधुरस-34	178
142.	मधुरस-35	179
143.	मधुरस-36	179
144.	सोहर (बेटीक छठिहार)	180
145.	भक्तिरस-1	181
146.	भक्तिरस-2 (प्रार्थना)	182
147.	भक्तिरस-3	184
148.	भक्तिरस-4 हरि बिनु रमा...	185

Vijoy Shankar Mallik

परिवर्त्तन

सदिखन देखी सबठां देखी,
भीतर देखी बाहर देखी।
ऋतुधर्मक रीति प्रतीति दे,
ई थिक दुनियावी अनुरंजन।
क्षण प्रतिक्षण होइछ परिवर्त्तन।।

जौ बुन्द बुन्द सौं घैल भरय।
आ टपकि टपकि घट रिक्त करय।
जौ सूर्य चंद्र ऊगय डूबय,
तौं निश्चय ऊर्जाक छनन मनन।
क्षण प्रतिक्षण होइछ परिवर्त्तन।।

बहुरूपक साज सजल धरणी,
नितप्रति घटइत बढ़इत रजनी,
कारी उज्जर चोपरि छितरल,
जहँ गोटीक होइछ जन्म मरन।
क्षण प्रतिक्षण होइछ परिवर्त्तन।।

Vijoy Shankar Mallik

इतिहास खण्डहर देखा कहय।
भूगोल खगोलक दृश्य बनय।
श्रुत वेद भूत भविष्यो के,
परिदृश्य देखाओल कर मंथन।
क्षण प्रतिक्षण होइछ परिवर्त्तन।।

जौं देखि सकी, गति देखु आहाँ।
जुनि पढ़ू लिखू बहु लेख अहाँ।
नजरिक समक्ष सब साफ साफ,
ई क्षरण मरन कि जन्म मरन।
क्षण प्रतिक्षण होइछ परिवर्त्तन।।

मधुरस-17

एना कियै मुरझल तन तोरी?
पसरल लाली शीथ भाल बिच विन्दिया कतय उड़ल भँव छोरी।

केश फूजल आँचर उड़इत देखि
मोड़ मुड़ल कत आंगि चोली।
हरबरैल सन अस्त व्यस्त अछि
लगै जेना कियो कैल झिकझोरी।
नहुँ नहुँ चुपचुप निकसि रहल अहाँ
लगय लखय कियो निवि के डोरी।
Vijoy Shankar Mallik
मणि मुक्ता केर माला बाझल
आँखिक अलस गेल ने छोरी।
दंत पंक्ति अंकित कपोल दुहू के कयलक अछि सेवक चोरी।
पायल हाथ घयल की कारण लाथ करू ने कहु चितचोरी।
कतेक जतन तन पोसल एते दिन
श्याम सुन्दर सब ओरि दियोरी।
रूपरंग लखि बुझल 'सुधापति'
चितवन थिर करहु हे गोरी।